विद्याश्री न्यास : गतिविधि 2014

'नारी चेतना और हिन्दी साहित्य' पर केन्द्रित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं भारतीय लेखक-शिविर

आचार्य विद्यानिवास मिश्र के जन्म-दिवस (मकर संक्रान्ति) के अवसर पर दिनांक 12 से 14 जनवरी 2014 तक साहित्य अकादमी के सहयोग से विद्याश्री न्यास और हिन्दी विभाग, श्री बलदेव पी.जी. कॉलेज के संयुक्त उपक्रम के रूप में तीन दिवसीय भारतीय लेखक-शिविर और 'नारी-चेतना और हिन्दी साहित्य' विषय पर केन्द्रित राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन धर्मसंघ शिक्षा-मण्डल में सम्पन्न हुआ।

उद्घाटन-सत्र में बीज वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय की प्राध्यापिका, लेखिका प्रो. कुमुद शर्मा ने कहा कि नारी-चेतना या स्त्री-विमर्श के केन्द्र में अस्मिता का बोध है। स्त्री को अस्तित्वमान बनाने और उसकी पहचान दर्ज कराने का प्रयास आज के स्त्री-लेखन की रचनात्मक अभिव्यक्ति में अनेक रूपों में दिखता है। उन्होंने सांस्कृतिक, सामाजिक तथा तकनीकी परिवर्तनों के सन्दर्भ लेते हुए निजत्व की चेतना, चुनने की आजादी और अस्मिता की चुनौती को रेखांकित किया। स्वातंत्र्योत्तर साहित्य में शिक्षा, आत्मनिर्भरता, स्वावलम्बन आदि को पितृसत्ता के विरोध में खड़ा किया गया है। स्त्री-चरित्रों में विद्रोह की प्रवृत्ति दिखती है। एक नई लड़की जन्म ले रही है जो नारी-चेतना की नई रोशनी से लैस है। उन्होंने स्त्री की आजादी को देह-विमर्श तक सीमित रखने को आयातित अवधारणा बताया। भूमंडलीकरण के दौर में स्त्री को मात्र सेक्स-ऑब्जेक्ट बनाना और उसे बाजार की चीज समझना और पेश करना स्त्री की वास्तविकता से दूर ले जाता है। आज स्त्री-विमर्श में केवल प्रतिरोध ही नहीं, मानववादी मूल्यों की पहचान भी जरूरी है। मुख्य अतिथि, उड़िया की प्रसिद्ध कथाकार डॉ. प्रतिभा राय ने कहा कि विभिन्न भाषाएँ आंचलिक हो सकती हैं परन्तु साहित्य वैश्विक मूल्यों वाला होता है। लेखक अपनी कल्पना और अनुभव से ऊपर उठकर लिंगभेद और भौगोलिक सीमाओं के पार जाता है। सर्जक अर्धनारीश्वर होता है, वह नारी-चरित्र के चित्रण के समय नारी-भाव रखता है और पुरुष-चरित्र को प्रस्तुत करते हुए पुरुष-भाव धारण करता है। सर्जक निर्भय होता है, वह ईश्वर से भी प्रश्न कर सकता है। वह एक सुन्दर मानवीय पृथ्वी की रचना को उद्यत होता है। डॉ. प्रतिभा राय ने नारीवादी को भी मानववादी मानने की अपेक्षा जताई।

समारोह की अध्यक्षता कर रहे आचार्य कमलेश दत्त त्रिपाठी ने संगोष्ठी के केन्द्रीय विषय पर ऐतिहासिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में विचार करने के लिए आमंत्रित किया। पिछले ढाई सौ साल में औपनिवेशिक सत्ता के चलते भारत का आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक तंत्र प्रायः नष्ट-भ्रष्ट हो गया है। इसने दलित, शोषित और स्त्री के साथ व्यावहारिक धरातल पर विद्यमान अपने विचारों पर पुनरावलोकन के लिए बाध्य कर दिया है। उत्तर आधुनिक चिन्तन में नारी-विमर्श की खास जगह बनी है जिसकी अभिव्यक्ति नारीवादी आन्दोलन और लेखन में हो रही है, लेकिन प्रायः आधे-अधूरेपन के साथ। ऐसे में पं. विद्यानिवास मिश्र के रचना-सूत्र अत्यन्त प्रासंगिक हैं जो 'समग्र' पर बल देते हैं।

सत्र के प्रारम्भ में डॉ. अरुणेश नीरन ने प्रस्तावना के रूप में आगामी सत्रों के विचार-विषयों को स्पष्ट करते हुए अतिथियों का स्वागत किया।

सभागार को संभावना कलामंच के कलाकारों की पोस्टर-प्रदर्शनी, कविता पोस्टर-प्रदर्शनी और हेमलता पाण्डेय की कला-प्रदर्शनी ने सारस्वत प्रभाव से मण्डित किया। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन आगत अतिथियों ने अपने रेखांकन से किया। अतिथियों ने पं. विद्यानिवास मिश्र की संवाद-पुस्तक 'गंगा से भूमध्य सागर तक (सं. दयानिधि मिश्र) का लोकार्पण भी इस सत्र में किया। सत्र का संचालन प्रकाश उदय तथा धन्यवाद-ज्ञापन डॉ. गिरीश्वर मिश्र ने किया।

संगोष्ठी के दूसरे सत्र में 'नारी-चेतना और हिन्दी कविता' विषय पर चर्चा हुई। डॉ. बजरंग बिहारी तिवारी ने कहा कि भक्तिकाल के साहित्य में स्त्री की कई छवियाँ हैं और उसकी स्वाधीनता कई तरह से और कई तरफ से व्यक्त हुई है। डॉ. अरविन्द त्रिपाठी के अनुसार कविता में स्त्री की उपस्थिति पहले भी थी लेकिन आधुनिक कविता में आधुनिकता के वरण के साथ ही परम्परा से संघर्ष के रूप में भी उसमें बदलाव आया है। डॉ. भारती गोरे ने समकालीन कविता में स्त्री के प्रश्नाकुल होने को रेखांकित किया। आज की कविता में स्त्री पुरुष-विरोधी नहीं है, वह उसे साथ लेना और उसका साथ देना चाहती है। डॉ. बलिराज पाण्डेय ने बताया कि हिन्दी की प्रगतिशील कविता में स्त्री की श्रम-शक्ति के महत्त्व को प्रकट किया गया है। वह अपनी मुक्ति के लिए संघर्षरत है। डॉ. एस. शेषरत्नम ने कविताओं की बदलती प्रवृत्तियों में स्त्री की अस्मिता का विश्लेषण प्रस्तुत

किया। अपने अध्यक्षीय संबोधन में प्रो. चन्द्रकला त्रिपाठी ने कहा कि छायावादी कविता में राष्ट्रीय नवजागरण का पक्ष स्त्री-मुक्ति के प्रश्नों के साथ जुड़कर महत्त्वपूर्ण हुआ। स्त्री-अस्मिता को एक सम्पूर्ण स्वतंत्र आत्मचेता रूप में देखा जाना चाहिए। इस सत्र का सफल संचालन कवि वशिष्ठ अनूप ने किया।

तीसरे सत्र में जाने-माने कथाकार प्रो. काशीनाथ सिंह की अध्यक्षता में विद्वानों ने हिन्दी कथा-साहित्य के संदर्भ में नारी-चेतना की गहन पड़ताल की। प्रसिद्ध कथाकार चन्द्रकान्ता के अनुसार पचास के दौर के आसपास कृष्णा सोबती, उषा प्रियम्वदा, मन्नू भंडारी से लेकर मुक्ता, मृदुला गर्ग, चित्रा आदि ने स्त्री के प्रति बढ़ते अत्याचारों का तीव्र विरोध किया। वैश्वीकरण के इस दौर में स्त्री के प्रति बढ़ते भेद-भाव को लेकर तीव्र प्रतिक्रियाएँ होने लगी हैं। आज स्त्री पुरुष का नहीं पुरुष मानसिकता का विरोध कर रही है। बेशक कुछ लेखिकाएँ देह-विमर्श में धँस गई हैं, पर नारी-चेतना का विस्तार भी हुआ है, वह घरबार के दायरे से बाहर आकर राष्ट्र की बड़ी समस्याओं पर भी विमर्श कर रही है, आतंकवादी परिणतियों पर भी। वह मानवीय कथा को केन्द्र में रखकर संवेदनहीन होते समाज को चेताना चाहती है। बलवन्त कौर का कहना था कि स्त्री के उत्पीड़न-शोषण का रूप हर देशकाल में बदलता रहा है, इसलिए उसके अतिक्रमण की चेतना भी बदलती रही है। आजादी के पूर्व की लेखिकाएँ भले ही सामाजिक चेतना से युक्त थीं लेकिन उनका लेखन हाहाकार से आगे न बढ़पाया। आजादी के बाद की ऐसी लेखिकाएँ जो आज भी सक्रिय हैं, स्वयं को स्त्रीवादी कहलाने से परहेज करती हैं, लेकिन ाज की लेखिकाओं का रचना-कर्म अस्मितावादी राजनीति से जुड़ गया है और प्रतिरोध की एक नई संस्कृति पनपी है। कवि-कथाकार-चिन्तक डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय ने कहा कि स्वतंत्रता के पूर्व के उपन्यासकारों में प्रेमचन्द, जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी, सियारामशरण गुप्त, अज्ञेय, यशपाल, भगवती चरण वर्मा आदि ने नारी-चेतना को जागृत किया और बाद के उपन्यासकारों को दिशा दी। कथाकार नीरजा माधव के मुताबिक भारतीय संस्कृति में नारी स्वयं को परिवार और राष्ट्र की केन्द्रीय शक्ति मानती है। अपने भीतर के नैसर्गिक गुणों की चेतना उसके भीतर भी है और पुरुषों के भीतर भी। मुट्ठीभर उच्छेदवादी आजादी के झूठे नारे के पीछे उसका अमानवीकरण करना चाहते हैं जिससे सतर्क रहने की जरूरत है। डॉ. प्रेमशीला शुक्ल और अजय मिश्र ने क्रमशः रेणु और रुद्र काशिकेय के विशेष संदर्भ में उनकी नारी-चेतना के विभिन्न आयामों को व्यक्त किया। नारी-चेतना और स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों पर बोलते हुए मुम्बई से आए प्रो. सत्यदेव त्रिपाठी ने कहा कि कृष्णा सोबती, उषा प्रियम्वदा और मन्नू भंडारी की पहली लेखिका पीढ़ी से लेकर इक्कीसवीं सदी के पहले दशक की जयंती-जैसी युवा लेखिकाओं तक ने नारी-स्वातंत्र्य व अस्मिता के विभिन्न कोणों और आयामों को ढूँढ़ने तथा स्थापित करने के सफल प्रयत्न किए। इस कालावधि में कथालेखिकाएँ इस कदर पूरे समय पर छा गईं कि लेखकों की जमात लगभग धूमिल-सी पड़ गई,लेकिन पुरुष लेखकों ने भी नारी-चेतना के प्रखर रूपों को सामने लाने में कोई कोताही नहीं की। अध्यक्षीय संबोधन में प्रो. काशीनाथ सिंह ने कहा कि बेटी से दादी बनने तथा एक घर से दूसरे घर में जाने-जमने तक स्त्री को जितना सहना और जितना सामना करना पड़ता है वह पुरुष के बूते की बात नहीं है। प्रेम उसका सबसे बड़ा बल है। खाप पंचायतों के स्त्री विरोधी रवैये की आलोचना करते हुए उन्होंने प्रेम को प्रश्रय देने पर बल दिया। स्त्री-लेखन की बहुआयामी लब्धियों को उन्होंने रेखांकित किया।

भारतीय लेखक-शिविर और राष्ट्रीय संगोष्ठी के प्रथम दिवस को 'दूब-धान' की नाट्य-प्रस्तुति से पूर्णता मिली। पं. विद्यानिवास मिश्र स्मृति सम्मान से सम्मानित कथालेखिका उषाकिरण खान की कहानी 'दूबधान' को संगीत-निर्देशक अजय और जनमेजय, कलाकार सुखदा खांडेकर और लक्ष्मी त्रिपाठी के सहयोग से निर्देशिक कनुप्रिया शंकर पंडित ने सफलतापूर्वक मंचित कर सहृदय सामाजिकों की भूरिशः प्रशंसा अर्जित की। इस सांस्कृतिक सन्ध्या के प्रारम्भ में लद्दाख से आए युवा स्काटजन, डोलकर, स्पाजिंगस, दिग्जिन आदि ने मनोहारी लोकगीत प्रस्तुत किया।

दूसरे दिन, 13 जनवरी को चौथा सत्र 'नारी-चेतना और वाचिक साहित्य' पर केन्द्रित रहा। दूरदर्शन केन्द्र दिल्ली के साहित्य-प्रभाग के निदेशक श्री अमरनाथ अमर ने प्रेम को नारी की चेतना और उसके अस्तित्व से जुड़ा बताया। उन्होंने गाँव से चलकर कस्बे, नगर, महानगर और विदेशों तक पहुँचने वाली नारियों की चेतना में आए बदलावों को समझने की जरूरत पर बल दिया। प्रो. अवधेश प्रधान ने लोक-आख्यानों में निहित नारी-चेतना को रेखांकित करते हुए बताया कि उनमें जातीय जीवन की वे तस्वीरें हैं जो जातीय जीवन की आधुनिक समझ के खोखलेपन को उजागर कर देती हैं।लोक आख्यानों से प्रेरित सूफी आख्यानों ने स्त्री को परमात्म तत्व के रूप में और पुरुष को साधक के रूप में प्रस्तुत किया। ये आख्यान बताते हैं कि स्त्री का कोई एक ही प्रकार नहीं होता। दिल्ली से पधारे श्री रविप्रकाश टेकचन्दानी ने सिन्धी, भोजपुरी और राजस्थानी कहावतों के माध्यम से पारिवारिक जीवन और समाज की स्त्री-सम्बन्धी सोच-समझ को रेखांकित किया। लोकगीतों का संदर्भ लेते हुए गिरीडीह से आए डॉ. बलभद्र ने कहा कि खेतों में काम करते वक्त, पर्व-त्योहारों, शादी-विवाह या अन्य संस्कारों में स्त्रियाँ जो

गाती हैं, जिस अंदाज में, वह बेहद मानवीय है और पुरुष मानसिकता सहित तमाम तरह की स्थितियों को लेकर कई तरह की प्रतिक्रियाओं से सम्पन्न है। नारी-जीवन के हास-रुदन, पीड़ा-प्रतिकार की अभिव्यक्ति लोकगीतों में एक खुलेपन के साथ संभव होती है। श्रीमती विद्याविन्दु सिंह ने अनेक लोकगीतों के जरिये स्त्री की पारिवारिकता, संबंध-बोध और प्रतिरोध-चेतना को व्यक्त किया। उन्होंने लोकसाहित्य में निहित प्रगति और परिवर्तन के स्वर को रेखांकित किया। उनके अनुसार लोकसाहित्य की नारी-चेतना नारी-विमर्श का वह चेहरा है जिसमें वह देह से मुक्त है, वह अपने स्व के विस्तार को ही मुक्ति मानती है। अपने अध्यक्षीय संबोधन में डॉ. मृदुला सिन्हा ने नारी-चेतना को जाग्रत करने में लोकसाहित्य की भूमिका को रेखांकित करते हुए बताया कि जब से महिलाओं को लोकगीतों में ढूँढ़ना छोड़ दिया गया है, नारी सशक्तीकरण के प्रयास विफल होने लगे हैं। इस सत्र का संचालन लोकसाहित्य के रस में पगे डॉ. विजेन्द्र पाण्डेय ने किया। उल्लेखनीय है कि अगले सत्र नारी-चेतना और स्त्री-विमर्श का अध्यक्षीय संबोधन अपनी कुछ अकादमिक व्यस्तताओं के चलते प्रसिद्ध कथा-लेखिका कमल कुमार ने इसी सत्र में प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि आज का स्त्री-विमर्श मानवीय स्वतंत्रता का, मानवीय अधिकारों का विमर्श है। आज स्त्री-देह की साइबर मण्डी बन गई है। पुरुष के सोच को बदलना ही स्त्री-विमर्श है, स्त्री की अस्मिता का सम्मान ही असली स्त्री-विमर्श है।

पाँचवें और छठे सत्र को प्रो. श्रद्धानन्द ने कुशलतापूर्वक एक साथ संयोजित किया। इस 'नारी-चेतना एवं स्त्री-विमर्श' तथा 'नारी-चेतना और मीडिया' की संयुक्त अध्यक्षता करते हुए डॉ. रंजन कुमार सिंह ने कहा कि बेशक मीडिया वही परोसता है जिसे लोग चाहते हैं लेकिन सवाल यह है कि क्या सामान्य जन की रुचि का उन्नयन भी मीडिया का दायित्व नहीं है? निर्भया प्रसंग में मीडिया की भूमिका को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि मीडिया के ही चलते इस प्रसंग का साधारणीकरण हो पाया और निर्भया में हर किसी को अपनी बहन, अपनी बेटी नजर आई। श्री आशुतोष शुक्ला ने एक पत्रकार के रूप में पूर्वांचल में घटित हो रही उस खामोश क्रांति को रेखांकित किया जिसे वे स्त्रियाँ अन्जाम दे रही हैं जिनका पति बाहर कमा रहा है, घर पर पैसा भेज रहा है। उनके अनुसार स्त्री सशक्त है, पुरुष उसकी तुलना में कमजोर है, इसलिए स्त्री को पुरुष की बराबरी नहीं करनी है, पुरुष को उसकी बराबरी करनी है। बेटी का सम्मान हो, यह अगर चाहते हैं तो अपने बेटे को यह सम्मान करना सिखाया जाना चाहिए। डॉ. सुरेश सैनी, उपमहानिरीक्षक रेलवे सुरक्षाबल ने मीडिया से नारी-कर्मठता के अनछुए पहलुओं को सामने लाने की अपेक्षा की। स्त्री स्वयं को सर्वदा और सर्वथा सुरक्षित महसूस करे यह किसी भी सभ्य समाज का अनिवार्य दायित्व है। 'स्त्री-चेतना और स्त्री-विमर्श' पर बात करते हुए श्री अरुणवर्धन ने स्त्री-लेखन की उन कमजोरियों की तरफ इशारा किया जो उसे अपनी ही घेरेबंदियों से बाहर नहीं निकलने देतीं। डॉ. शशिकला पाण्डेय ने 'नारी शोषण' (आशा-व्होरा), 'देह की राजनीति से देश की राजनीति' (मृणाल पाण्डेय), 'परिधि पर स्त्री' और 'द सेकेण्ड सेक्स' (सिमोन दि वोउआ) के हवाले से स्त्री-विमर्श के विविध आयामों के भारतीय संदर्भों की पहचान की। गुड़गाँव से आईं डॉ. सविता उपाध्याय के अनुसार नारी-लेखन केवल देह-मुक्ति की बात नहीं करता वह राष्ट्रीय चेतना से जुड़ा हुआ है। शोषण और अत्याचार जहाँ है, जिस स्तर पर, आज का स्त्री-साहित्य उसके प्रतिरोध में खड़ा है। डॉ. विभास वर्मा ने कहा कि स्त्री-लेखन, स्त्री-विमर्श और स्त्रीवादी आन्दोलन- ये तीनों नारी-चेतना के अलग-अलग रूप हैं जो परस्पर संबद्ध भी हैं। किसी भी समाज में इन तीनों रूपों का विकास के अलग-अलग चरणों में होना उस समाज में नारी की स्थिति को जटिल बनाता है। पाश्चात्य और भारतीय नारी-विमर्श में कुछ धाराएँ ऐसी हैं जो तात्त्विक तौर पर स्त्री-पुरुष की समानता की बात नहीं करतीं बल्कि स्त्रीतत्व को पुरुषतत्व से वरेण्य मानती हैं। डॉ. मुक्ता के अनुसार स्त्री-विमर्श के केन्द्र में स्त्री की अस्मिता के प्रश्न हैं जिनकी परिधि में इतिहास, पुरुषप्रधान व्यवस्था, आर्थिक शोषण, सामाजिक दमन, अधिकार-हनन, दोहरे मानदंड तथा पारिवारिक वैवाहिक सम्बन्ध आदि हैं। स्त्री-विमर्श को महिला सशक्तीकरण की एक मुहिम कहना बेहतर होना। यह महिला-देह के बाजारीकरण का विरोध करना है। आज का स्त्री-लेखन स्त्री-विमर्श को मंच देने की ओर अग्रसर है। फुरुष को अपने वर्चस्व की पुरुषवादी मानसिकता से मुक्त होना होगा, तभी एक मानवीय समाज संभव है। डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी के अनुसार स्त्री-विमर्श को समझने के लिए इसके प्रस्थानबिन्दु को देखने की जरूरत है जो थेरीगाथा से लेकर 'सीमंतिनी उपदेश' और 'शृंखला की कड़ियाँ' में विद्यमान है और आज का स्त्री-विमर्श उस चेतना का छू भी नहीं सका है।

संगोष्ठी के दूसरे दिन की संध्या एक वृहत् काव्य-गोष्ठी को समर्पित हुई, जिसकी अध्यक्षता वरिष्ठ कवि परमानंद आनंद ने की। गोष्ठी की शुरुआत आस्था ने अपनी कविता 'चाँद' के पाठ से की। व्रजेशचन्द्र पाण्डेय, प्रियंका सिंह, सौरभ सिंह, पराग पवन, सुशील कुमार मानस, उद्देश्य, अजय मिश्र, आलोक सिंह, कौशल किशोर मिश्र, महेन्द्र अलंकार, सरोज कुमार, विहाग वैभव,, रंजन मिश्र, रामअवतार पाण्डेय, कमल कुमार, गिरिधर करुण, मंजुला चतुर्वेदी, इन्द्र कुमार दीक्षित,

दीपंकर भट्टाचार्य, अशोक कुमार सिंह घायल, अशोक सिंह, मुक्ता, उमाशंकर चतुर्वेदी, कंचन, योगेन्द्र नारायण वियोगी, विश्वनाथ कुमार, विजेन्द्र मिश्र, सुरेश कुमार मौर्य, बलभद्र, सौरभ चन्द्र पाण्डेय प्रभृति कवियों ने अपने काव्य-पाठ से श्रोताओं की प्रशंसा पाई। कविगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए कवि परमानंद आनंद ने कहा कि सृष्टि की पहली और अंतिम रचना नारी है, उससे बड़ी कोई रचना नहीं हो सकती है। उल्लेखनीय है कि इस कवि-गोष्ठी में कविता की युवा प्रतिभाओं ने अपने रचना-सामर्थ्य से सुधी श्रोताओं को विशेषतः अभिभूत किया।

संगोष्ठी के तीसरे दिन 14 जनवरी, 2014 को सातवाँ सत्र अन्तर्भारतीय युवा समवाय के रूप में आयोजित हुआ। 'नारी सशक्तीकरण' पर केन्द्रित इस सत्र में डॉ. विभा त्रिपाठी ने कहा कि भारत लौकिक समता की वैश्विक साख्यिकी में 148 देशों में 132वें पायदान पर खड़ा है, उसे इन प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ने ही होंगे कि क्यों आज भी स्त्री को व्यक्ति की जगह वस्तु माना जा रहा है, क्यों सदियों से उसे अपनी शुचिता सिद्ध करनी पड़ती है। सशक्त नारी ही सशक्त और सुरक्षित समाज का सृजन कर सकती है। डॉ. श्रुति कुमुद के अनुसार स्त्री के दृष्टि-बिन्दु से हमें सामाजिक मूल्यों, मान्यताओं, मिथकों, व्यवहारों तथा आर्थिक-सामाजिक परिवर्तनों को देखना चाहिए। उसके अन्तर्निहित स्त्री-विरोधी तत्वों की पहचान और उसके अन्तर्विरोधों को लक्षित करना आवश्यक है। पितृसत्तात्मकता के मूल्य स्त्री की प्रखर अस्मिता को चोट पहुँचाते हैं। समीक्षक, शिक्षाविद डॉ. निरंजन सहाय ने अपने व्याख्यान में भाषा और शिक्षा के संदर्भ में स्त्री के प्रश्न पर विचार किया। उनके अनुसार हमारे शैक्षिक उपक्रम फिलहाल पुरुष वर्चस्व से प्रेरित हैं। ज्ञान का संबोधन और चित्रण पुरुषवाची है और लक्ष्य पुरुष वर्चस्व के हक में है। जिन लोगों ने सावित्री बाई फुले पर कीचड़ फेंके, गोबर डाला- स्त्री-शिक्षा के विरोधी स्वर आज भी सक्रिय है। उन्हें समय के दबाव में साइकिल चलाती, बैडमिण्टन खेलती लड़की का चित्रण तो बर्दास्त होगा पर घर, समाज में स्वतंत्र स्त्री-निर्णय, जो घरेलूपन की सीमाओं का अतिक्रमण कर बनते हैं, स्वीकार नहीं है।

इस सत्र में पूर्वोत्तर भारत के छात्रों अखिलचन्द्र कलिता, चिन्मय डेका, देवाजित कलिता, इ. के. दुनोई और अथूकम सुनीता चानु ने भी आलेख-पाठ किया। निबंध और आलेख-प्रतियोगिता के प्रथम-द्वितीय-तृतीय पुरस्कार प्राप्त प्रतिभागियों का भी आलेख-वाचन हुआ। अपने अध्यक्षीय संबोधन में डॉ. सुशीला सिंह ने नारी-चेतना को परम्परा से जोड़ते हुए भारतीय परिदृश्य में रखकर देखने की जरूरत पर बल दिया। इस सत्र का संयोजन डॉ. प्रेमशीला शुक्ल ने किया।

संगोष्ठी का अन्तिम सत्र आ. विद्यानिवास मिश्र के स्मृति-संवाद तथा विभिन्न पुस्तकों के लोकार्पण और सम्मान-समारोह के रूप में सम्पन्न हुआ। विद्याश्री न्यास के संस्थापक प्रो. महेश्वर मिश्र की अध्यक्षता में सम्पन्न इस सत्र में डॉ. मृदुला सिन्हा ने पण्डित जी को अर्धनारीश्वर के रूप में याद किया। डॉ. मंजुला चतुर्वेदी ने अपनी कुछ कविताओं के माध्यम से उन्हें याद किया। प्रो. वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी ने उनके रचना-कर्म में व्याप्त जीवन-रस और भोजपुरी-भाव की विशद चर्चा की। प्रो. श्रीनिवास पाण्डेय ने देश की चारित्रिक छवि को धूमिल पड़ने से बचाये रखने के लिए पण्डित जी के कृतित्व व्यक्तित्व से प्रेरणा लेने की बात कही। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय ने पण्डित जी से जुड़े अनेक भावभरे संस्मरणों को श्रोताओं से साझा किया। डॉ. सुजीत कुमार सिंह ने संगोष्ठी पर प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए विभिन्न सत्रों की वैचारिक लब्धियों को रेखांकित किया।

इस समापन-समारोह को राजकुमार उपाध्याय मणि की दो पुस्तकों 'संवादमिमद्भुतम्' तथा 'हिन्दी साहित्य : वस्तुनिष्ठ परिचय' एवं प्रो. अरविन्द कुमार पाण्डेय की पुस्तक 'भारतीय शिक्षा के अनमोल रत्न' के लोकार्पण का श्रेय भी प्राप्त हुआ। अन्त में, अपने अध्यक्षीय संबोधन में न्यास के संस्थापक प्रो. महेश्वर मिश्र ने पण्डित विद्यानिवास मिश्र के जीवन से जुड़े कुछ अविस्मरणीय प्रसंगों की भावपूर्ण प्रस्तुति की। उन्होंने पण्डित जी से संबंधित अनेक भ्रम-भ्रांतियों का सप्रमाण निराकरण किया। डॉ. मुक्ता ने लोकार्पित पुस्तकों का परिचय देने के साथ ही विद्याश्री न्यास की तरफ से सभी अतिथियों को धन्यवाद ज्ञापित किया। इस सत्र का संयोजन प्रकाश उदय ने किया।

विद्यानिवास मिश्र स्मृति सम्मान

पं. विद्यानिवास मिश्र के जन्म-दिवस के अवसर पर आयोजित भारतीय लेखक शिविर में हिन्दी-मैथिली की प्रसिद्ध लेखिका श्रीमती उषाकिरण खान को 'सिरजनहार' उपन्यास के लिए 'आचार्य विद्यानिवास स्मृति सम्मान-2014' से सम्मानित किया गया। उद्घाटन-सत्र के अध्यक्ष, मुख्य अतिथि तथा न्यास के सचिव डॉ. दयानिधि मिश्र ने अंगवस्त्र, पंचमाल, पंचपुस्तक, स्मृति- चिह्न, प्रशस्ति-पत्र तथा रु. 21000/- की सम्मान-राशि से उन्हें सम्मानित किया।

लोक कवि सम्मान / राधिका देवी लोक कला सम्मान / श्रीकृष्ण तिवारी गीतकार सम्मान

भारतीय लेखक शिविर के समापन सत्र के अध्यक्ष प्रो. महेश्वर मिश्र एवं विद्याश्री न्यास के सचिव डॉ. दयानिधि मिश्र

ने लोककवि सम्मान-2014 से भोजपुरी-हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि श्री रवीन्द्र श्रीवास्तव 'जुगानी भाई' को राधिका देवी स्मृति लोककला सम्मान से श्रीमती हेमलता पाण्डेय को तथा श्रीकृष्ण तिवारी गीतकार सम्मान से श्री परमानन्द 'आनन्द' को अंगवस्त्र, प्रशस्ति-पत्र, स्मृति चिह्न और सम्मान राशि से सम्मानित किया। इस अवसर पर डॉ. प्रेमप्रकाश पाण्डेय ने श्रीमती हेमलता पाण्डेय के कला-कर्म पर प्रकाश डाला तथा जुगानी भाई और श्री परमानन्द आनन्द ने स्वीकृति-व्यक्त के साथ अपने काव्यपाठ से भी सत्र को संपन्न किया।

आलेख / निबन्ध / पोस्टर / श्रीमती राधिका देवी लोककला प्रतियोगिता व प्रदर्शनी

युवा प्रतिभाओं के प्रोत्साहन के लिए न्यास की तरफ से आयोजित आलेख-प्रतियोगिता में प्रथम-द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले रत्नेश कुमार मिश्र, (शोध छात्र, पूर्वांचल वि.वि.) तथा संध्या पाण्डेय (शोध छात्रा बी.एच.यू. को), निबन्ध-प्रतियोगिता में प्रथम-द्वितीय-तृतीय तथा सान्त्वना पुरस्कारप्राप्त क्रमशः अथोकम सुमिता चानु (शोध छात्रा, इम्फाल, मणिपुर), लक्ष्मण कुमार मिश्र, (शोधछात्र, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ), अखिल कुमार कलिता, (कामरूप, आसाम) एवं चिन्मय डेका (शिलांग) को; पोस्टर प्रतियोगिता में प्रथम द्वितीय स्थान प्राप्त प्रियंका देवी (श्री बलदेव पी.जी. कॉलेज, बड़ागाँव) तथा चाँदनी दूबे (श्री बलदेव पी.जी. कॉलेज, बड़ागाँव) को और राधिका देवी लोक चित्रकला प्रतियोगिता में प्रथम-द्वितीय-तृतीय स्थान प्राप्त हिमांशु पाण्डेय, अखिलेश चौहान तथा श्रद्धा चतुर्वेदी (सभी ललित कला विभाग, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ) को पुरस्कृत किया गया।

इस अवसर पर न्यास की तरफ से सभागार में भव्य पोस्टर-प्रदर्शनी का आयोजन करने वाले संभावना कला-मंच के संस्थापक डॉ. राजकुमार सिंह एवं सभी कलाकारों– सर्वश्री राजीव कुमार गुप्ता, सुधीर सिंह, पंकज शर्मा, शालिनी सिंह, एजाज अहमद, जयश्री गुप्ता, गजाला परवीन, सपना सिंह, आशीष कुमार गुप्ता, कृष्ण कुमार पासवान, अनिता माला, वृजेश कुमार, रवि कुमार चौरसिया, वरुण कुमार मौर्य, फरहीन बानो, मीरा वर्मा, अमित सिंह कुशवाहा, साधना माला, चंदन यादव एवं शाहिद को सम्मानित किया गया।

संस्कृत कवि गोष्ठी

14 फरवरी को प्रसिद्ध साहित्यकार पं. विद्यानिवास मिश्र की पुण्यतिथि पर विद्याश्री न्यास एवं संस्कृत विभाग, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के संयुक्त तत्वावधान में काशी विद्यापीठ के पुस्तकालय भवन में संस्कृत कवि-गोष्ठी आयोजित की गयी। कवि-गोष्ठी के मुख्य अतिथि श्री शिवजी उपाध्याय एवं विशिष्ट अतिथि श्री प्रभुनाथ द्विवेदी थे। अध्यक्षता न्यायमूर्ति श्री गणेश दत्त दूबे ने की। शुभारम्भ दीप-प्रज्ज्वलन एवं पं. विद्यानिवास मिश्र, महात्मा गाँधी, श्री शिव प्रसाद गुप्त एवं माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण तथा श्री अजीत कुमार तिवारी के वैदिक मंगलाचरण से हुआ। स्वागत डॉ. उमारानी त्रिपाठी ने एवं संचालन श्री राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय ने किया।

डॉ. पवन कुमार शास्त्री ने होलीगीत सुनाया- 'होली खेलति श्याम : श्यामया सह''। डॉ. विवेक कुमार पाण्डेय ''नोस्त्रादमिव भविष्यवक्ता भवितुकामोऽहम्'' पंक्तियों के माध्यम से आधुनिक सामाजिक एवं पर्यावरणीय विभीषका को रेखांकित किया। डॉ. कमला पाण्डेय ने आज की विसंगतियों के संदर्भ में श्रीकृष्ण स्मरण की प्रासंगिकता को रेखांकित किया- ''अद्य कालियमर्दनेन प्रयोजननं मनाजपि''। युवा कवियों में श्री शेष नारायण मिश्र ने शिव स्तुति की लयबद्ध प्रस्तुति एवं श्री विश्वनाथ एम.वी. ने दूरस्थ प्रदेश से आये हुए व्यक्ति की उद्देश्य-भावना और पं. महामना मदन मोहन मालवीय के बारे में विभिन्न छन्द सुनाए। डॉ. धर्मदत्त चतुर्वेदी ने ''क्षमत्वं भारतीयानां न जानीते हि पाकः सः'' एवं ''विद्याश्रीन्यासाधिष्ठानम्'' शीर्षक से अपने काव्य-पाठ द्वारा क्रमशः पाकिस्तान को चेतावनी दी एवं विद्याश्री न्यास के भारतीय संस्कृति के संवर्धन में अद्वितीय योगदान के प्रति श्रद्धा व्यक्त की। प्रो. सदाशिव द्विवेदी ने अपने काव्यपाठ द्वारा पं. विद्यानिवास मिश्र की रचनाओं में शास्त्र तत्व की विवेचना की। डॉ. उमारानी त्रिपाठी ने स्वामी करपात्री जी के पद वन्दन के रूप में एक कविता सुनाई तो गोपीगीत 'गोविन्दा मनो मे आनन्दय' का सस्वर पाठ किया। प्रो. प्रभुनाथ द्विवेदी ने हास्य कविता 'पुच्छहीनः शुको वरन्' सुनाकर श्रोताओं की प्रशंसा अर्जित की।

मुख्य अतिथि प्रो. शिवजी उपाध्याय ने संस्कृत काव्यगोष्ठी की महत्ता को रेखांकित करते हुए उसे अपनी समीक्षकीय टिप्पणी से सम्पन्न करते हुए काव्यपाठ प्रस्तुत किया।

अध्यक्षीय उद्बोधन में न्यायमूर्ति गणेश दत्त दूबे ने संस्कृत काव्य-गोष्ठी को पं. विद्यानिवास मिश्र के वैदुष्य के अनुकूल आयोजन बताया। साथ ही उन्होंने कोहरे पर एक कविता का पाठ भी किया।

धन्यवाद-ज्ञापन विद्याश्री न्यास के सचिव डॉ. दयानिधि मिश्र ने किया।

पण्डित विद्यानिवास मिश्र स्मृति व्याख्यान, पं. मधुसूदन ओझा स्मृति संवाद एवम् 'संस्कृत भाषा एवं संस्कृति' पर राष्ट्रीय परिसंवाद

पं. विद्यानिवास मिश्र की स्मृति में स्थापित विद्याश्री न्यास एवं पं. मधुसूदन ओझा, पं. मोतीलाल शास्त्री एवं पं. ऋषि कुमार मिश्र की स्मृति में स्थापित श्री शंकर शिक्षायतन, नई दिल्ली एवं संस्कृत एवं अन्य प्राच्य भाषा विभाग, म.गां. काशी विद्यापीठ के संयुक्त तत्वावधान में 22-23 दिसम्बर, 2014 को दो दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद का आयोजन म.गां. काशी विद्यापीठ के पुस्तकालय भवन के सभागार में सम्पन्न हुआ।

समारोह के प्रथम दिन प्रथम सत्र में बोलते हुए प्रो. रजनीश शुक्ल, सं.सं.वि.वि. ने त्रिगुण के आधार पर संस्कृति की व्याख्या की। उन्होंने पं. विद्यानिवास मिश्र को याद करते हुए कहा कि उन्हें देखकर भारतीयता की ऊर्जा का आभास होता था। उन्होंने मधुसूदन ओझा की भाष्य दृष्टि को भी रेखांकित किया। मुख्य वक्ता प्रो. युगल किशोर मिश्र, सं.सं.वि.वि. ने पं. मधुसूदन ओझा द्वारा वेद-व्याख्या के ग्रंथों को एक कीर्तिमान बताया और कहा कि उन्हीं की प्रेरणा से वेद-अध्यापन को मैंने अपने जीवन का अंग बनाया। पं. मिश्र को याद करते हुए प्रो. युगल किशोर जी ने उन्हें अपना गुरु बताया। संस्कृत शब्दों व उनकी व्युत्पत्ति की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि संस्कृत के शब्दों की उत्पत्ति का तार्किक आधार होता है। द्वन्द्वरहित शिक्षा को उन्होंने ज्ञान के रूप में परिभाषित किया तथा संस्कृति की व्याख्या करते हुए प्रत्यक्ष और परोक्ष पाँच ऋणों को स्पष्ट किया। ऋषि-ऋण, देव-ऋण व पितृ ऋण को परोक्ष ऋण तथा पंचमहाभूत ऋण व मनुष्यों के प्रति ऋण को प्रत्यक्ष ऋण के रूप में उन्होंने परिभाषित किया। श्री मुरली मनोहर पाठक, अध्यक्ष संस्कृत विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय ने पं. मधुसूदन ओझा को दी गई 'अभिनव वेदव्यास' की उपाधि को सही ठहराया। इसके अतिरिक्त विश्व को भारतीय संस्कृति द्वारा प्रदत्त ऋत तथा वेदों में वर्णित दो प्रकार की बुद्धि प्रमति व सुमति का विवेचन करते हुए वचन व कर्म के भेद की व्याख्या की। प्रो. सुधाकर मिश्र सं.सं.वि.वि. ने वेदों की व्याख्या में पं. मधुसूदन ओझा के योगदान पर प्रकाश डाला। अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में प्रो. सत्यदेव मिश्र, पूर्व कुलपति, जगद्‌गुरु रामानन्दाचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान ने पं. विद्यानिवास मिश्र को अपना गुरु बताया व उनसे पाँच दशक से ज्यादा के अपने नियमित सम्पर्क से सम्बंधित स्मृतियाँ विस्तार से साझा कीं। पं. मधुसूदन ओझा संस्थान, जोधपुर विश्वविद्यालय के पं. ओझा के सन्दर्भ में किये जा रहे कार्य की उन्होंने सराहना की तथा संस्कृति, संस्कार व संस्कृत का स्वरूप स्पष्ट करते हुए इनके सम्बंधों पर प्रकाश डाला। इस क्रम में उन्होंने पुरुषार्थ, आश्रम तथा योग को भारतीय संस्कृति का अप्रतिम अंग बताया तथा पं. ओझा के ग्रंथों में वेदों में प्राकृतिक विज्ञान के सभी रूपों से सम्बंधित सन्दर्भ-सामग्री को एक उपलब्धि कहा, जो वर्तमान में अत्यन्त उपयोगी है। प्रथम सत्र का संचालन प्रो. राममूर्ति चतुर्वेदी ने किया। स्वागत डॉ. उमारानी त्रिपाठी ने तथा धन्यवाद-ज्ञापन डॉ. दयानिधि मिश्र ने किया।

द्वितीय सत्र में बोलते हुए प्रो. जयशंकर लाल त्रिपाठी ने कहा कि जब भी संस्कृत एवं संस्कृति की बात होती है तो उनके बीच भेद करना कठिन होता है। साथ ही मानव संसाधन विकास मंत्री श्रीमती स्मृति ईरानी द्वारा संस्कृत के विषय में उठाये गए कदम की प्रशंसा की। संस्कृत व संस्कृति की रक्षा हेतु उन्होंने सत्य, तप तथा त्याग को अपरिहार्य बताया। मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. गयाराम पाण्डेय ने कहा कि भारतीयता का आधार भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत है क्योंकि भारतीय संस्कृति मनुष्य, समाज, राष्ट्र एवं विश्व को आपस में जुड़ा मानती है और संस्कृत को देववाणी माना जाता है। संस्कृत से प्रभावित होकर ही अन्य भारतीय भाषाएँ पुष्पित एवं पल्लवित हुई हैं। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. अमरनाथ पाण्डेय ने कहा कि संस्कृत से संस्कृति में परिवर्तन होता है, संस्कृति हमें वृत्ति बताती है, परन्तु संस्कृत हमें त्याग करना सिखाती है। मैक्समूलर जब भारत आया तो उसके गुरु ने यह बताया कि अगर आप वेद का अध्ययन करना चाहते हैं, तो आवश्यक है कि आप 'सायण का भाष्य' पढ़ें। द्वितीय सत्र का संचालन/धन्यवाद ज्ञापन श्री कृष्ण दत्त मिश्र ने किया। इस अवसर पर प्रो. रजनाथ त्रिपाठी, अरविन्द चौधरी, ध्रुव नारायण पाण्डेय, विनीत श्रीवास्तव, सत्येन्द्र मिश्र, विकास वर्मा एवं स्थानीय महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के छात्र-छात्राओं की उपस्थिति थी।

परिसंवाद के दूसरे दिन तृतीय सत्र में भी हरिप्रसाद अधिकारी ने संस्कृत की प्राचीनता का उल्लेख करते हुए इस क्षेत्र में अभी भी बड़ी संख्या में कार्य किए जाने की आवश्यकता बतायी। वित्त अधिकारी, म.गां. काशी विद्यापीठ, श्री राम रतन शर्मा ने अपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्र जीवन में शिक्षकों से प्राप्त स्नेह का स्मरण करते हुए सात चक्रों के संस्कृति व अध्यात्म में महत्व को रेखांकित किया। मुख्य वक्ता के रूप में श्री अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने स्वयं को पं. विद्यानिवास मिश्र का पुत्रकल्प बताया व उनके कार्यों का उल्लेख किया। उन्होंने वैश्विक परिदृश्य में भारतीय संस्कृति की व्यापकता व प्राचीनतम विचारकों के आधारभूत ज्ञान में संस्कृत की भूमिका को स्पष्ट किया। इस सन्दर्भ में पीर-पैगम्बरों द्वारा अपनी शायरी में भारत

की भूरि-भूरि प्रशंसा व प्राचीनतम इतिहासकारों द्वारा भारत वर्णन का उल्लेख कर उन्होंने विश्व स्तर पर भारत के सांस्कृतिक सम्पर्क की बात कही। वृहत्तर भारतीय संस्कृति से आरम्भ कर उन्होंने यूरोप, एशिया, अफ्रीका सहित सम्पूर्ण विश्व पर भारतीय संस्कृति व संस्कृत के प्रभाव से सम्बंधित अनेक उद्धरण प्रस्तुत कर उपस्थित जनसमूह को भाव-विभोर कर दिया। बारह शताब्दियों की दासता को ज्ञानात्मक परम्परा के विच्छिन्नता का कारण बताते हुए उन्होंने प्राचीनतम ग्रंथों में आधुनिक तथ्यात्मक छेड़छाड़ पर चिन्ता व्यक्त की। संस्कृत को सभी भाषाओं की जननी कहते हुए इसे सभी भारतीय भाषाओं के मध्य एकता का सूत्र बताया। श्री अधिकारी ने इतिहास, संस्कृत व संस्कृति के मध्य सामंजस्य स्थापित करते हुए विचार प्रकट किये। अध्यक्षीय सम्बोधन में श्री शंकर दयाल द्विवेदी ने छात्र जीवन में अपने गुरू पं. विद्यानिवास मिश्र की कक्षाओं को सर्वाधिक लोकप्रिय बताते हुए संस्कृत पठन-पाठन करने वालों को धन्य बताया व अंग्रेजों विशेषकर मैकाले द्वारा भारतीय संस्कृति पर आघात की चर्चा के साथ भोगवादी संस्कृति के त्याग पर बल दिया। पं. मधुसूदन ओझा के लेखन को उन्होंने वेदों का पुनरुद्धार कहा व परम्पराओं के अगली पीढ़ी तक हस्तांतरण को आवश्यक बताया। आक्रमणकारियों में भारतीय संस्कृति पर सर्वाधिक दुष्प्रभाव अंग्रेजों का मानते हुए प्राचीन भारतीय ज्ञान का विज्ञान से सम्बंध स्पष्ट किया।

चतुर्थ सत्र में श्री कमलेश दत्त त्रिपाठी ने कहा कि भाषा और संस्कृति का अन्तः सम्बंध तब अत्यन्त विशिष्ट हो जाता है, जब भाषा और चेतना को अभिन्न स्वीकार कर लिया जाता है, संस्कृति का वह अन्तस तत्व भाषा में प्रतिष्ठित ही रहता है। किसी संस्कृति के अन्त का अमोघ उपाय उसकी भाषा को अशक्त, निर्बल और अन्ततः मृत कर देना है। पिछले छह दशकों से वही होता रहा है। भारत की भाषा सम्पदा को हाशिये पर कर देने तथा विदेशी भाषा को इसके स्थान पर स्थापित करने की चेष्टा होती रही है। आज यह कहना भी विवाद का विषय हो गया है कि भारतीय भाषा के स्थान पर एक विदेशी भाषा को स्थापित करना गलत है। संस्कृत जैसी संस्कृति की प्राणभूत भाषा को जो संविधान प्रदत्त अधिकार भी है, उससे भी वंचित कर देने के प्रयत्न की दुरभिसंधि बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है। संस्कृत और भारतीय संस्कृति पर्याय हैं। संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाएँ ही भारतीय सांस्कृतिक निजता बनाती है। इसके पश्चात अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने आज संस्कृत की सभी विधाओं में आज के समाज की समस्याएँ उठाई व समाहित की गई हैं। इससे संस्कृत की प्रासंगिकता तथा उसके भाषा-सौन्दर्य की नवीनता का बोध होता है। संस्कृत आज राष्ट्रीय परिवेश से भी बाहर निकलकर विश्व-संवेदना में व्याप्त हो गई है। यूनानी पुराकथाओं के मानकों को आधार बनाकर आज जो भावाभिव्यक्ति की जा रही है, वह इसका प्रमाण है। जापान तथा कोरिया के हाइकू तथा सीजो-तान्का छन्द संस्कृत में भी अपनाए जा रहे हैं।